हिन्दी दैनिक

रहस्य संदेश

RNI.NO.UPHIN2007/20715

4 एटा से प्रकाशित गुरूवार 22 सितंबर 2022 पृष्ठ : 8 मूल्य : 50 पैस

फसल अवशेषों को मिट्टी में मिलाने से होगा आर्थिक लाभ-डॉक्टर खलील

(अनवर अशरफ)

कानपुर (रहस्य संदेश)चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने "फसल अवशेषों को न जलाने जलाएं,बल्कि बनाये खाद" नामक किसानों हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि फसल अवशेषों में आग लगाने से वातावरण में हानिकारक गैसों की मात्रा बढ़ जाती है। जिससे मानव एवं पशु-पक्षियों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। साथ ही सूचहम जीवो की भी मृत्यु हो जाती है। जो मिट्टी की उपजाऊ शक्ति एवं रोग प्रतिरोधक क्षमता बनाए रखने के लिए आवश्यक है। उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों के जलाने से फास्फोरस और पोटाश जैसे पोशाक तत्व अघुलनशील अवस्था में हो जाते हैं। जिससे मृदा का पीएच मान बढ़ जाता है। और उसकी उर्वरा

शक्ति नष्ट हो जाती है।इसके अतिरिक्त पशुओं के लिए चारे की कमी हो जाती है। डॉक्टर खान ने बताया कि कृषि अवशेष एक महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन है जो मिट्टी के स्वास्थ्य और संरचना के लिए बहुत ही आवश्यक है। उन्होंने किसानों को बताया कि धान के पुआल को मृदा में मिलाने से 0.36ब्र नाइट्रोजन, 0.10ब्र फॉस्फोरस, 1.70ब्र पोटाश,जबकि मक्का के फसल अवशेष में 0.47ब्रनाइट्रोजन,0.50ब्र फॉस्फोरस एवं 1.65ब्र पोटाश मिट्टी को प्राप्त हो जाता है। जिससे मृदा उपजाऊ हो जाती है और किसान भाइयों को आर्थिक लाभ होता है। डॉक्टर खान ने बताया कि फसल अवशेषों को मृदा में मिलाने से उनकी संरचना में सुधार, पर्यावरण सुधार, मृदा क्षरण व पोषक तत्वों की अधिकता, जल क्षमता में वृद्धि तथा आर्थिक लाभ में वृद्धि होती है।उन्होंने किसान भाइयों से फसल अवशेष न जलाने के लिए अपील की है।

फसल अवशेषों को मिट्टी में मिलाने से होगा आर्थिक लाभ

कानपुर, 21 सितम्बर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने फसल अवशेषों को न जलाने जलाएं, बल्कि बनाये खाद नामक किसानों हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि फसल अवशेषों में आग लगाने से वातावरण में हानिकारक गैसों की मात्रा बढ़ जाती है। जिससे मानव एवं पशु-पक्षियों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। साथ ही सूचहम जीवो की भी मृत्यु हो जाती है। जो मिट्टी की उपजाऊ शक्ति एवं रोग प्रतिरोधक क्षमता बनाए रखने के लिए आवश्यक है। उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों के जलाने से फास्फोरस और पोटाश जैसे पोशाक तत्व अघुलनशील अवस्था में हो जाते हैं। जिससे मृदा का पीएच मान बढ़ जाता है। और उसकी उर्वरा शक्ति नष्ट हो जाती है। जो मिट्टी के स्वास्थ्य और संरचना के लिए बहुत ही आवश्यक है। उन्होंने किसानों को बताया कि धान के पुआल को मृदा में मिलाने से 0.36 प्रतिशत नाइट्रोजन, 0.10 प्रतिशत फॉस्फोरस, 1.70 प्रतिशत पोटाश,जबकि मक्का के फसल अवशेष में 0.47 प्रतिशत नाइट्रोजन,0.50 प्रतिशत फॉस्फोरस एवं 1.65 प्रतिशत पोटाश मिट्टी को प्राप्त हो जाता है। जिससे मृदा उपजाऊ हो जाती है और किसान भाइयों को आर्थिक लाभ होता है। डॉक्टर खान ने बताया कि फसल अवशेषों को मृदा में मिलाने से उनकी संरचना में सुधार, पर्यावरण सुधार, मृदा क्षरण व पोषक तत्वों की अधिकता, जल क्षमता में वृद्धि तथा आर्थिक लाभ में वृद्धि होती है।उन्होंने किसान भाइयों से फसल अवशेष न जलाने के लिए अपील की है।

हिंदुस्तान कानपुर देहात 22/09/2022

फसल अवशेष प्रबंधन के लिए शुरू हुआ अभियान

- केवीके के वैज्ञानिकों ने किसानों को शुरू किया जागरूक करना
- फसल अवशेषों को मिट्टी में मिलाने से होगा आर्थिक लाभ

कानपुर देहात, संवाददाता। धान की फसल की कटाई के पहले ही किसानों को पराली जलाने से रोकने के लिए कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर की ओर से जागरूकता अभियान शुरु क़िया गया है। इसमें किसानों को अवशेष प्रबंधन के फायदे बताए जा रहे हैं।

मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने ''फसल अवशेषों को न जलाने जलाएं,बल्कि बनाये खाद'' के नाम से किसानों के लिए एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि फसल अवशेषों में आग लगाने से वातावरण में हानिकारक गैसों की मात्रा बढ़ जाती है।इससे मानव एवं पशु-पक्षियों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। साथ ही सूक्ष्म जीवों की भी मृत्यु हो जाती है। जो मिट्टी की उपजाऊ शक्ति एवं रोग प्रतिरोधक क्षमता बनाए रखने के लिए आवश्यक है। उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों के जलाने से फास्फोरस और पोटाश जैसे पोषक तत्व अघुलनशील अवस्था में हो जाते हैं।

इससे मृदा का पीएच मान बढ़ जाता है और उसकी उर्वरा शक्ति नष्ट हो जाती है। इसके अतिरिक्त पशुओं के लिए चारे की कमी हो जाती है। उन्होंने बताया कि कृषि अवशेष एक महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन है जो मिट्टी के स्वास्थ्य और संरचना के लिए बहुत ही आवश्यक है।

उन्होंने किसानों को बताया कि धान के पुआल को मृदा में मिलाने से 0.36 प्रतिशत नाइट्रोजन, 0.10 प्रतिशत फॉस्फोरस, 1.70 प्रतिशत पोटाश,जबकि मक्का के फसल अवशेष में 0.47 प्रतिशत नाइट्रोजन,0.50 प्रतिशत फॉस्फोरस एवं 1.65 प्रतिशत पोटाश मिट्टी को प्राप्त हो जाता है। इससे मृदा उपजाऊ हो जाती है और किसान भाइयों को आर्थिक लाभ होता है। फसल अवशेषों को मृदा में मिलाने से उनकी संरचना में सुधार, पर्यावरण सुधार, मृदा क्षरण व पोषक तत्वों की अधिकता, जल क्षमता में वृद्धि तथा आर्थिक लाभ में वृद्धि होती है। उन्होंने किसानों से फसल अवशेष न जलाने के लिए अपील की है।

WORLD खबर EXPRESS

WORLD खबर एक्सप्रेस

बुधवार 21 सितंबर 2022

अंक - 248

www.twitter.com/worldkhabarexpress www.facebook.com/worldkhabarexpress www.youtube.com/worldkhabarexpress

'फसल अवशेषों को मिट्टी में मिलाने से होगा आर्थिक लाभ'

कानपुर । चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने 'फसल अवशेषों को न जलाने जलाएं, बल्कि बनाये खाद' नामक किसानों हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि फसल अवशेषों में आग लगाने से वातावरण में हानिकारक गैसों की मात्रा बढ़ जाती है। जिससे मानव एवं पशु-पक्षियों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। साथ ही सूक्ष्म जीवों की भी मृत्यु हो जाती है। जो मिट्टी की उपजाऊ शक्ति एवं रोग प्रतिरोधक क्षमता बनाए रखने के लिए आवश्यक है। उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों के जलाने से फास्फोरस और पोटाश जैसे पोषक तत्व अनुपलब्ध अवस्था में हो जाते है। जिससे मृदा का पीएच मान बढ़ जाता है। और उसकी उर्वरा शक्ति नष्ट हो जाती है। इसके अतिरिक्त पशुओं के लिए चारे की कमी हो जाती है। डॉक्टर खान ने बताया कि कृषि अवशेष एक महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन है जो मिट्टी के स्वास्थ्य और संरचना के लिए बहुत ही आवश्यक है। उन्होंने किसानों को बताया कि धान के पुआल को मृदा में मिलाने से 0.36 प्रतिशत नाइट्रोजन, 0.10 प्रतिशत फॉस्फोरस, 1.70 प्रतिशत पोटाश, जबकि मक्का के फसल अवशेष में 0.47 प्रतिशत नाइट्रोजन, 0.50 प्रतिशत फॉस्फोरस एवं 1.65 प्रतिशत पोटाश मिट्टी को प्राप्त हो जाता है। जिससे मृदा उपजाऊ हो जाती है और किसान भाइयों को आर्थिक लाभ होता है। डॉक्टर खान ने बताया कि फसल अवशेषों को मृदा में मिलाने से उसकी संरचना में सुधार, पर्यावरण सुधार, मृदा क्षरण व पोषक तत्वों की अधिकता, जल क्षमता में वृद्धि तथा आर्थिक लाभ में वृद्धि होती है। उन्होंने किसान भाइयों से फसल अवशेष न जलाने के लिए अपील की है।

फसल अवशेषों को मिट्टी में मिलाने से होगा आर्थिक लाभ

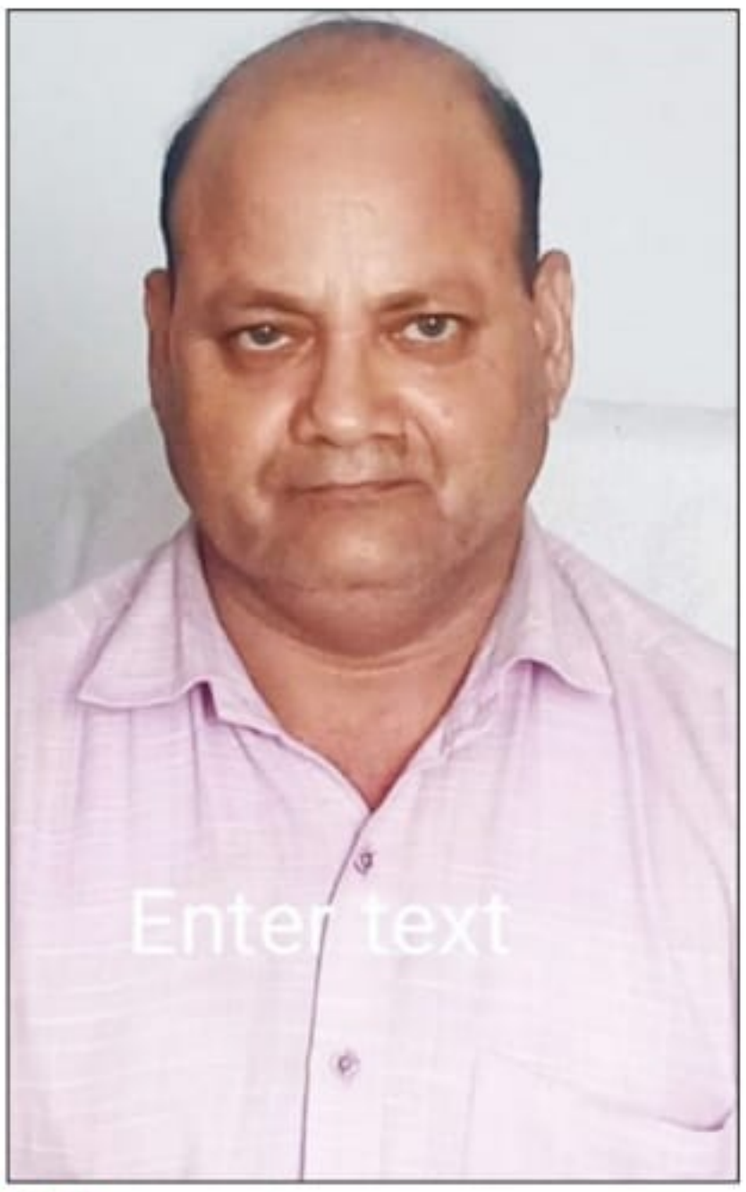

डीटीएनएन

कानपुर । चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने फसल अवशेषों को न जलाने जलाएं,बल्कि बनाये खादज्ञ नामक किसानों हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि फसल अवशेषों में आग लगाने से वातावरण में हानिकारक गैसों की मात्रा बढ़ जाती है। जिससे मानव एवं पशु-पक्षियों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। साथ ही सूचहम जीवो की भी मृत्यु हो जाती है। जो मिट्टी की उपजाऊ शक्ति एवं रोग प्रतिरोधक क्षमता बनाए रखने के लिए आवश्यक है। उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों के जलाने से फास्फोरस और पोटाश जैसे पोशाक तत्व अघुलनशील अवस्था में हो जाते हैं। जिससे मृदा का पीएच मान बढ़ जाता है। और उसकी उर्वरा शक्ति नष्ट हो जाती है इसके अतिरिक्त पशुओं के लिए चारे की कमी हो जाती है। डॉक्टर खान ने बताया कि कृषि अवशेष एक महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन है जो मिट्टी के स्वास्थ्य और संरचना के लिए बहुत ही आवश्यक है। उन्होंने किसानों को बताया कि धान के पुआल को मृदा में मिलाने से 0.36त्न नाइट्रोजन, 0.10त्न फॉस्फोरस, 1.70त्न पोटाश,जबकि मक्का के फसल अवशेष में 0.47त्ननाइट्रोजन,0.50त्न फॉस्फोरस एवं 1.65त्न पोटाश मिट्टी को प्राप्त हो जाता है। जिससे मृदा उपजाऊ हो जाती है और किसान भाइयों को आर्थिक लाभ होता है। डॉक्टर खान ने बताया कि फसल अवशेषों को मृदा में मिलाने से उनकी संरचना में सुधार, पर्यावरण सुधार, मृदा क्षरण व पोषक तत्वों की अधिकता, जल क्षमता में वृद्धि तथा आर्थिक लाभ में वृद्धि होती है इन्होंने किसान भाइयों से फसल अवशेष न जलाने के लिए अपील की है।